ज्ञान सागर

(कक्षा-सातवीं)

प्रकाशन विभाग

डी.ए.वी. कॉलेज प्रबंधकर्त्री समिति

चित्रगुप्त मार्ग, नयी दिल्ली-110055

विषय-सूची

क्रम संख्या	पाठ	रचनाकार	पृष्ठ संख्या
1.	बारहमासा (कविता)	नारायण लाल परमार	1
2.	नाटक में नाटक (कहानी)	मंगल सक्सेना	6
3.	निर्मला, साँप और सयाल (कहानी)	सिगरुन श्रीवास्तव	15
4.	बातूनी (कहानी)	हरिशंकर परसाई	24
5.	*राजू का सपना (कहानी)	श्रीमती कमलेश	29
6.	समय (कविता)	डॉ. रामगोपाल वर्मा	32
7.	स्कूल की छुट्टियाँ (कहानी)	आर. के. नारायण	37
8.	एवरेस्ट की चुनौती (कहानी)	मेजर हरिपालसिंह अहलूवालिया	46
9.	सवाल का जवाब (कहानी)	हरिकृष्ण देवसरे	56
10.	*झंडा ऊँचा रहे हमारा (कविता)	श्यामलाल प्रसाद	64
11.	उस रात की बात (कहानी)	मिथिलेश्वर	65
12.	दोहे (पद्य)	–	72
13.	साहस को सलाम (डायरी)	–	76
14.	*एस. रामानुजन (जीवनी)	दिलीप मधुकर सालवी	82
15.	अन्नदाता कृषक (कविता)	पूरन चन्द्र काण्डपाल	87
16.	देशभक्त पुरु (नाटक)	प्रो. सी. जे. दासवाणी, डॉ. ओम प्रकाश सिंह	92
17.	काकी (कहानी)	सियारामशरण गुप्त	100
18.	बाल-लीला और कुंडलिया (पद्य)	–	107
19.	गणेशोत्सव (निबंध)	सविता जाजोदिया	110
20.	कर्मवीर (कविता)	रामधारी सिंह 'दिनकर'	118

* केवल पढ़ने के लिए हैं। परीक्षा में इनमें से सवाल नहीं पूछे जाएँगे।

1

बारहमासा

चैत महीने का प्यारा,
सुंदर रूप **अनूप** है।
गरम हवा चलने लगती,
खट्‌मिट्‌ठी-सी धूप है।

आते ही बैसाख के,
छुट्‌टी हुई **मदरसों** की।
लगा गूँजने घर-आँगन,
किलकारी से बच्चों की।

कोई लगातार हारा,
लेकिन कोई जीत रहा।
तरह-तरह के खेलों में,
जेठ महीना बीत रहा।

काले-काले बादल भी,
नभ में चलें, दहाड़ के।
आँधी इतराने लगी,
लगते ही आषाढ़ के।

सावन की शोभा न्यारी,
हरियाली के ठाठ हैं।
नदी सरोवर छलक रहे,
डूब गए सब घाट हैं।

पता न चलता तारों का,
जाने कहा **मयंक** है।
झाँक नहीं पाता सूरज,
भादों का आतंक है।

शब्दार्थः अनूप–निराला, अति सुंदर; **मदरसा**–पाठशाला, विद्‌यालय; **मयंक**–चंद्रमा

भैया **क्वार** महीने में
निर्मल होती जलधारा।
मौसम कर देता सारी
हँसी-खुशी का बँटवारा।

कार्तिक में जाड़ा आता,
साथ पटाखे फुलझड़ियाँ।
फबती सबके चेहरों पर,
मुसकानों की मधु लड़ियाँ।

अगहन नाच नचा देता,
बर्फ़ **सरीखा** है पानी।
चलो नहा लो माँ कहती,
नहीं चलेगी मनमानी।

उड़ी पतंगें पौष में,
बाज़ी लगती ज़ोर से।
गली, मोहल्ले, **अटारियाँ,**
भर जाते सब शोर से।

माघ महीना भर देता,
मन में नई उमंग है।
कहीं मंजीरे, झाँझ कहीं,
बजता कहीं मृदंग है।

लो वह आ पहुँचा फागुन,
रस की उड़ी फुहार है।
रंगों के कारण लगता
यह जीवन त्योहार है।

—नारायण लाल परमार

शब्दार्थः क्वार—आश्विन का महीना; **फबना**—जँचना; **अगहन**—मार्गशीर्ष मास; **सरीखा**—जैसा, तरह; **अटारियाँ**—छतें

कविता में से

1. भारतीय महीनों के नाम लिखिए।
2. वर्षा ऋतु में क्या-क्या होता है?
3. अगहन नाच क्यों नचा देता है?
4. **उचित उत्तर पर सही (√) का निशान लगाइए–**

(क) कौन-से महीने में बच्चों की किलकारी से घर-आँगन गूँजने लगता है?

☐ बैसाख ☐ चैत ☐ आषाढ़ ☐ कार्तिक

(ख) रंगों के कारण जीवन कैसा लगता है?

☐ अच्छा ☐ अनोखा ☐ त्योहार ☐ प्यारा

5. **कविता के आधार पर लिखिए कि दी गई चीज़ें/गतिविधियाँ किस महीने में होती हैं–**

चीज़ें/गतिविधियाँ	**महीने का नाम**
(क) आँधी आती है।	....
(ख) गरम हवा चलती है।	....
(ग) मदरसों की छुट्टी होती है।	....
(घ) नदी-सरोवर भर जाते हैं।	....
(ङ) जाड़ा आता है।	....
(च) पतंगें उड़ती हैं।	....
(छ) तरह-तरह के खेल खेले जाते हैं।	....

बातचीत के लिए

1. कविता की जिन पंक्तियों से पता चलता है कि सूरज और चाँद नज़र नहीं आते, उन्हें पढ़िए।
2. पतंगें उड़ाने के लिए बच्चे क्या-क्या करते हैं?
3. आपको कौन-सा महीना सबसे अच्छा लगता है और क्यों?